प्रतिदर्श प्रश्नपत्र - I

कक्षा- X

हिंदी (पाठ्यक्रम 'बी ')

अधिकतम अंक - 100 **समय --- 3 घंटे**

निर्देश : इस प्रश्नपत्र के चार खंड हैं ------- 'क', 'ख', 'ग' और 'घ'। चारों खंडों के उत्तर देना अनिवार्य है। यथासंभव प्रश्नों के उपभागों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

प्र०संख्या	प्रश्न	अंक
	खंड 'क'	
1	**क) निम्नलिखित में से किन्हीं दो में संधि कीजिए :**	2
	अति + आनन्द , सत् + मार्ग, परम + ईश्वर	
	ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो में संधि-विच्छेद कीजिए :	2
	जगन्नाथ , उच्छिन्न, रवीन्द्र	
2	**निम्नलिखित पदों में से किन्हीं दो का विग्रह कीजिए और समास का भेद भी लिखिए :**	4
	अकालपीड़ित , महादेव , त्रिभुवन , यथासमय	
3	**निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :**	
	क) शब्द और पद का अंतर उदाहरण-सहित स्पष्ट कीजिए।	2
	ख) वर्षाऋतु में <u>काले-काले</u> मेघ <u>समस्त</u> आकाश पर <u>धीरे-धीरे</u> घिर आते हैं।	2
	(रेखांकित पदों में से किन्हीं दो के पद-भेद लिखिए)	
	ग) (i) किरणें वृक्षों की <u>चोटियों पर</u> क्रीड़ा करने लगीं।	1
	(रेखांकित का कारक लिखिए)	
	(ii) <u>उस नाटक में अभिनेता ने</u> सुंदर अभिनय किया।	1
	(रेखांकित में वचन बदलकर पूरा वाक्य फिर से लिखिए।)	
	(iii) विद्वान , सम्राट् (लिंग बदलकर लिखिए)	1
	घ) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्ही दो में वाच्य-परिवर्तन कीजिए :	2
	(i) मैं पढ़ नहीं सकता। (ii) उसने भोजन कर लिया है। (ii) मुझसे सहा नहीं जाता।	
4	**क) रचना के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए :**	
	(i) शिक्षक ने बताया कि कल विद्यालय बंद रहेगा।	1
	(ii) रातभर शोर होता रहा और मैं सो न सका।	1
	ख) अर्थ के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए :	
	(i) ओह ! कैसे काले-काले मेघ घिर आए !	1
	(ii) मुझे वह पुस्तक उठाकर दो।	1
	ग) निम्नलिखित वाक्यों को एक सरल वाक्य में बदलिए :	2
	(i) वर्षा हुई।	
	(ii) ठंडी-ठंडी हवा बहने लगी।	

प्र०संख्या	प्रश्न	अंक
	घ) वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए :	
	(i) मैने हस्ताक्षर कर दिया।	1
	(ii) सदा सत्य बोलना उसकी आदत था।	1
	ङ) उपयुक्त विरामचिह्न लगाइए :	2
	हे राष्ट्रभक्तो मृत्यु का भय मिथ्या है कर्तव्य में प्रमाद करना पाप है	
	संकोच और दुविधा अभिशाप है	
	खंड - 'ख'	
5	**संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 शब्दों में निबंध लिखिए :**	**10**
	क) **समय बहुमूल्य है :**	
	(i) बीता समय लौटकर नहीं आता	
	(ii) सफलता के लिए ठीक समय का चुनाव अपेक्षित	
	(iii) एक-एक क्षण का उपयोग सफलता की कुंजी	
	(iv) समय का सदुपयोग करने वाले, कुछ सफल लोग	
	(v) उपसंहार (काल्ह करै सो आज कर सूक्ति से) अथवा अन्य किसी उपयुक्त ढंग से।	
	ख) **मेरा देश महान :**	
	(i) प्रस्तावना - प्राचीन सभ्य देशों में अग्रगण्य	
	(ii) अद्‌भुत प्राकृतिक सौन्दर्य	
	(iii) गौरवशाली इतिहास	
	(iv) सभी धर्मों और संस्कृतियों की भूमि	
	(v) उपसंहार (अद्‌भुत है मेरा देश)	
	ग) **दया धर्म का मूल है :**	
	(i) तुलसी का दोहा - दया धर्म का मूल है , पाप मूल अभिमान।	
	(ii) संसार के हर धर्म में दया और करुणा पर बल।	
	(iii) परोपकार की भावना ही सबसे बड़ी मनुष्यता।	
	(iv) कुछ दयालु महापुरुषों के उदाहरण	
	(v) उपसंहार (सामाजिक कर्तव्यों में दया का सर्वोत्तम स्थान)	
6	मित्र को उसके जन्मदिन पर शुभकामना पत्र लिखिए।	5
	अथवा	
	अपने कार्यालय के महाप्रबंधक को पारस्परिक सहमति के आधार पर स्थानान्तरण कराने के लिए पत्र लिखिए।	
	खंड - 'ग'	
7	**निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :**	
	जब मैं वैयक्तिक और सामाजिक व्यवहार में अपनी भाषा के प्रयोग पर बल देता हूँ, तब निश्चय ही मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि व्यक्ति को दूसरी अथवा विदेशी भाषाएँ सीखनी नहीं चाहिए। नहीं, आवश्यकता, अनुकूलता, अवसर और शक्ति के अनुसार अनेक भाषाएँ सीखनी चाहिए तथा उनमें से एकाधिक में विशेष दक्षता भी प्राप्त करनी चाहिए; द्वेष किसी भी भाषा से नहीं करना चाहिए; क्योंकि किसी भी प्रकार के ज्ञान की उपेक्षा करना उचित नहीं है; किन्तु प्रधानता सदैव अपनी ही भाषा और	

प्र०संख्या	प्रश्न	अंक
	उसके साहित्य को देनी चाहिए ; क्योंकि अपनी संस्कृति, अपने समाज और अपने देश का सच्चा विकास और कल्याण केवल अपनी भाषा के व्यवहार द्वारा ही संभव है। ध्यान रखिए --- ज्ञान-विज्ञान, धर्म-राजनीति, तथा लोक-व्यवहार के लिए सदैव लोकभाषा का प्रयोग ही अभीष्ट है। अपने देश, अपने समाज और अपनी भाषा की सेवा तथा अभिवृद्धि करना सभी तरह से हमारा परम कर्तव्य है।	
	(i) उपर्युक्त गद्यांश को उपयुक्त शीर्षक दीजिए।	1
	(ii) अपनी भाषा के अतिरिक्त दूसरी भाषाएँ भी क्यों सीखनी चाहिए ?	1
	(iii) तुलनात्मक रूप में अपनी ही भाषा को महत्त्व क्यों दिया जाना चाहिए ?	1
	(iv) भाषाओं के अध्ययन और उनके प्रयोग में हमें क्या सावधानी बरतनी चाहिए ?	1
8	**निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :** संकटों से वीर घबराते नहीं , आपदाएँ देख छिप जाते नहीं। लग गए जिस काम में, पूरा किया, काम करके व्यर्थ पछताते नहीं। हो सरल अथवा कठिन हो रास्ता , कर्मवीरों को न इससे वास्ता। बढ़ चले तो अंत तक ही बढ़ चले, कठिनतर गिरिश्रृंग ऊपर चढ़ चले। कठिन पथ को देख मुस्काते सदा, संकटों के बीच वे गाते सदा। है असंभव कुछ नहीं उनके लिए, सरल-संभव कर दिखाते वे सदा। यह असंभव कायरों का शब्द है, कहा था नेपोलियन ने एक दिन। सच बताऊँ, जिंदगी ही व्यर्थ है, दर्प बिन, उत्साह बिन, औ शक्ति बिन।	
	(i) कविता में वीरों की जिन विशेषताओं पर बल दिया गया है, उनमें दो प्रमुख विशेषताएँ क्या-क्या हैं?	1
	(ii) कर्मवीरों को किस बात से कोई लेना-देना नहीं होता और क्यों?	1
	(iii) किन विशेषताओं के बिना जीवन व्यर्थ है और क्यों?	1
	(iv) नेपोलियन ने क्या कहा था? उससे क्या प्रेरणा मिलती है?	1
	खण्ड 'घ'	
9	**निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:** यह 'जागना' सारी चिंता का मूल है। जागना अर्थात् विवेक के साथ सोचना। निस्संदेह, मनुष्य ने अपने-आपके लिए 'महती विनष्टि' के साधन ढूंढ लिए हैं और वह बड़ी तेजी से महानाश की ओर दौड़ पड़ा है। यह भयंकर दु:संवाद है। परन्तु साथ ही मनुष्य की जिस बुद्धि ने यह सारा साज-सामान तैयार किया है, वह जाग भी रही है। मनुष्य के हृदय में पीड़ा है, तड़प है, यह आशा की बात है। यदि पीड़ा है तो आशा भी है।	
	(i) 'जागना' ही सारी चिंता का मूल है'– कैसे?	1
	(ii) लेखक का संकेत किस महानाश की ओर है, जिसकी तरफ मनुष्य तेजी से दौड़ रहा है?	2
	(iii) 'यदि पीड़ा है तो आशा भी है'– वाक्य को स्पष्ट करके समझाइए।	2

प्र०संख्या	प्रश्न	अंक
10	(क) 'कब्रिस्तान में पंचायत' पाठ में लेखक ने क्यों कहा है कि कब्रिस्तान वह जगह है, जहां सारी पंचायतें खत्म हो जाती हैं?	3
	(ख) 'भारत में गुरु-शिष्य संबंध का वह भव्य रूप आज भी विद्यमान है'– 'भारत में गुरु-शिष्य संबंध' पाठ के आधार पर इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।	3
11	'इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर' पाठ भारतीय पुलिस व्यवस्था पर एक करारा व्यंग्य है'– कैसे? तर्क सहित अपने विचार व्यक्त कीजिए। **अथवा** 'उत्सवधर्मी महादेवी' पाठ के आधार पर लिखिए कि लेखक के लिए होली के अवसर पर महादेवी जी के घर पर आयोजन में शामिल होना सुखद स्मृति क्यों है?	5
12	(क) 'स्वराज्य की नींव' एकांकी के आधार पर महारानी लक्ष्मीबाई की किन्हीं दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।	2
	(ख) 'पादुका पूजन' कहानी के आधार पर बताइए कि बहुत-सा काम करने पर भी चाचा 'निकम्मे' क्यों माने जाते थे?	2
13	**निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:** क्या घड़ी थी एक भी चिंता नहीं थी पास आई, कालिमा तो दूर, छाया भी पलक पर थी न छाई। आंख से मस्ती झपकती, बात से मस्ती टपकती, थी हंसी ऐसी जिसे सुन बादलों ने शर्म खाई। वह गई तो ले गई उल्लास के आधार, माना, पर अथिरता पर समय की मुस्कराना कम मना है!	
	(i) कवि और कविता का नामोल्लेख कीजिए।	1
	(ii) उपर्युक्त पंक्तियों में 'कालिमा' और 'छाया' का प्रयोग निराशा के भाव को व्यक्त करने के लिए हुआ है। आशा और उल्लास के भाव को व्यक्त करने वाली दो पंक्तियों का चुनाव कीजिए।	2
	(iii) 'पर अथिरता पर समय की मुस्कराना कम मना है'- पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।	2
14	कविवर बालकृष्णराव की कविता 'और भी हैं' का प्रतिपाद्य लागभग साठ-सत्तर शब्दों में स्पष्ट कीजिए।	4
15	**किसी एक काव्यांश का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए:** उड़ गया, अचानक लो, भूधर, फड़का अपार वारिद के पर। रव-शेष रह गए हैं निर्झर, है टूट पड़ा भू पर अंबर। **अथवा** श्याम तन, भर बंधा यौवन, नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन, गुरु हथौड़ा हाथ, करती बार-बार प्रहार– सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।	3
16	'तरुण से' कविता के आधार पर लिखिए कि युवकों की जीवन-धारा जड़-चेतन को किस प्रकार तृप्त करती है?	3

प्र०संख्या	प्रश्न	अंक
17	**किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए:** (क) पहली रात हत्यारे बिना काम किए क्यों लौट आए? 'हत्यारों की वापसी' कहानी के आधार पर लिखिए। (ख) 'वारिस' कहानी के आधार पर बताइए कि पुत्र का कौन-सा आचरण पिता की इच्छा के विपरीत था? (ग) 'प्रतिशोध' कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए। **अथवा** 'प्रतिशोध' कहानी के आधार पर बताइए कि महाबलिपुरम कोई बड़ी नगरी क्यों नहीं बन पाई?	2+2+2
18	अन्तरिक्षयान को लेकर क्या योजना बनाई गई थी? 'पार नजर के' कहानी के आधार पर लिखिए।	5
19	'किसी ने गलती की है और ये उम्र कैद की सजा भुगत रहे हैं'- 'वारिस' कहानी के आधार पर पिता के संबंध में मां के इस कथन का औचित्य समझाइए।	4

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र एक की अंक-योजना और उत्तर-संकेत

कक्षा - X ,

हिंदी (पाठ्यक्रम - 'बी')

अधिकतम अंक– 100

आवश्यक निर्देश : 1. परीक्षक प्रश्न के पूरे उत्तर को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

2. अंक–योजना के अनुसार प्रश्न के समस्त उत्तर–बिंदुओं को देखें और वितरित किए गए अंकों के आधार पर ही परीक्षार्थी को अंक दें।

3. उत्तर के आरंभ की कुछ अस्पष्ट अथवा ग़लत पंक्तियों को पढ़कर ही, पूरा उत्तर बिना पढ़े ही अनायास न काट दें। उत्तर सहानुभूतिपूर्वक पढ़ा जाए।

4. यदि उत्तर परीक्षार्थी के स्तरानुसार पूरी तरह ठीक है तो उसे शत–प्रतिशत अंक दिए जाएँ।

प्रश्न संख्या	संभावित उत्तर / मूल्य-बिंदु	अंक - विभाजन
	खण्ड -- 'क' (संधि, समास, पद-विचार और वाक्य-विचार) --	**27अंक**
1.	**संधि और संधि-विच्छेद :**	
	(क) अत्यानंद , सन्मार्ग , परमेश्वर	1+1=2
	(ख) जगत् + नाथ , उत् + छिन्न , रवि + इन्द्र	1+1=2
2.	**समास-विग्रह और समास के भेद :**	1+1+1+1=4
	अकालपीड़ित -- अकाल से पीड़ित -- करण तत्पुरुष	
	महादेव -- महान देव -- कर्मधारय	
	त्रिभुवन -- तीन भुवनों का समूह -- द्विगु	
	यथासमय -- समय के अनुसार -- अव्ययीभाव समास	
3	(क) शब्द और पद का अंतर– वाक्य में प्रयुक्त शब्द का व्याकरणिक रूप 'पद' कहलाता है।	स्पष्टीकरण-1
	यथा --- 'घर', 'रमेश', 'है', 'जाता' -- ये शब्द हैं। जब ये शब्द कारकीय	उदाहरण-1
	विभक्तियों के सहयोग से वाक्य में प्रयुक्त होते हैं -- यानी, 'रमेश' 'घर'	कुल- 2
	'जाता है' --- ये सभी शब्द पद बन जाते हैं।	
	(ख) काले-काले -- गुणवाचक विशेषण, विशेष्य है - 'मेघ'।	1+1=2
	समस्त -- परिमाणवाचक विशेषण, विशेष्य है -- 'आकाश'	
	धीरे-धीरे -- रीतिवाचक क्रिया विशेषण, विशेष्य है क्रिया -- 'घिर आए'।	
	(किन्हीं दो के पद-भेद बताने अपेक्षित)	
	(ग) (i) चोटियों पर - अधिकरण कारक।	1+1+1=3
	(ii) उन नाटकों में अभिनेताओं ने सुंदर अभिनय किया।	
	(iii) विदुषी, सम्राज्ञी	
	(घ) (i) मुझसे पढ़ा नहीं जाता। (ii) उसके द्वारा भोजन किया गया। (iii) मैं सह नहीं पाता।	2
	(किन्हीं दो में वाच्य परिवर्तन अपेक्षित)	
4	(क) (i) मिश्र वाक्य	1+1=2
	(ii) संयुक्त वाक्य	
	(ख) (i) विस्मयवाचक वाक्य	1
	(ii) आज्ञावाचक वाक्य	1
	(ग) वर्षा होने पर ठंडी - ठंडी हवा बहने लगी ।	2
	(घ) (i) मैने हस्ताक्षर कर दिए।	1
	(ii) सदा सत्य बोलना उसकी आदत थी।	1
	(ङ) हे राष्ट्रभक्तो! मृत्यु का भय मिथ्या है, कर्तव्य में प्रमाद करना पाप है,	½+½+½+½ =2
	संकोच और दुविधा अभिशाप है।	

प्रश्न संख्या	संभावित उत्तर / मूल्य-बिंदु	अंक - विभाजन
	खण्ड -- 'ख' (निबंध और पत्र)	
5	दिए गए बिंदुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 200 शब्दों में लिखित निबंध पर इस प्रकार अंक दिए जाएंगे -- (i) उपयुक्त भूमिका तथा प्रस्तावना (ii) विस्तार-कौशल (iii) विषय-प्रतिपादन-क्षमता (iv) भाषा - शैली (v) निष्कर्ष-निर्वाह	2+4+2+2 = 10
6	'मित्र को उसके जन्मदिन पर शुभकामना भेजना'- यह एक अनौपचारिक पत्र है, जिसमें पत्र के ढाँचे, कथ्य और शैली का समान महत्त्व है। इस पत्र की अंक-योजना निम्न प्रकार से होगी- पत्र का ऊपरी ढाँचा (प्रारूप) - पत्र के अधोभाग का प्रारूप - पत्र का मूल कथ्य - (iii) पत्र की भाषा -	1 अंक 3 अंक 1 अंक 5 अंक
	अथवा	
	कार्यालय के महाप्रबंधक को लिखित पत्र : इस पत्र की अंकयोजना भी उपर्युक्त रूप में ही होगी।	
7	(i) शीर्षक -- 'अपनी भाषा', 'अपनी भाषा का महत्त्व'। (इसी प्रकार का कोई भी उपयुक्त शीर्षक स्वीकार किया जाए।	1
	(ii) किसी भी प्रकार के ज्ञान की उपेक्षा करना उचित नहीं है।	1
	(iii) अपनी ही भाषा और उसके साहित्य को इसलिए प्रधानता दो, क्योंकि अपनी संस्कृति, अपने समाज और अपने देश की सच्ची तस्वीर अपनी ही भाषा में उभरती है और अपनी संस्कृति, समाज और राष्ट्र का सच्चा विकास अपनी भाषा द्वारा ही संभव है।	1
	(iv) भाषाओं के अध्ययन और प्रयोग में सदैव यह सावधानी बरती जानी चाहिए कि ज्ञान-विज्ञान अर्जन के लिए एक नहीं, अनेक भाषाएँ सीखनी चाहिए ; किन्तु अपनी भाषा को महत्त्व देते हुए उसे ही लोक-व्यवहार में प्रयुक्त किया जाना चाहिए।	1
8	(i) कविता में वीर की दो विशेषताओं पर प्रमुखता से बल दिया गया है ----- क) कठिन स्थिति में भी निर्भय बने रहना। ख) किसी भी काम को असंभव न मानना।	½+½=1
	ii) कर्मवीरों का मार्ग सरल है या कठिन--इस बात से उन्हें कुछ भी लेना-देना नहीं होता।	1
	iii) जिस व्यक्ति के जीवन में स्वाभिमान,उत्साह और शक्ति नहीं है,उसका जीवन व्यर्थ है।	1
	iv) कायर ही 'असंभव' शब्द पर विश्वास करते हैं। वीरों के लिए कुछ भी असंभव नहीं होता।	1

प्रश्न संख्या	संभावित उत्तर / मूल्य-बिंदु	अंक - विभाजन
	खण्ड 'घ'	
9	(i) जो विवेकपूर्वक सोचता है, वही चिंतक है और उसे ही किसी की चिंता है। जो सोचता ही नहीं, उसे किसी की क्या चिंता!	1
	(ii) अस्त्र-शस्त्रों की भयंकर और विनाशकारी होड़ में पड़कर मनुष्य तेजी से महानाश की ओर बढ़ रहा है।	2
	(iii) जब तक मन में पीड़ा और दर्द नहीं होगा, तब तक मनुष्य एकाग्रता पूर्वक समाधान की ओर प्रवृत्त नहीं होगा। यह दर्द और पीड़ा ठीक प्रसव-पीड़ा की तरह है, जिसके पश्चात् ही माँ को संतान-सुख मिलता है। मनुष्य के मन की पीड़ा ही आशाओं की जननी है।	2
10	(क) कब्रिस्तान एक ऐसा स्थान है, जहाँ व्यक्ति अपने सारे झगड़े-टंटे, न्याय-अन्याय और ईर्ष्या-द्वेष भुलाकर सहानुभूति और संवेदना लिए आता है। इसीलिए लेखक ने यह ठीक ही कहा है कि कब्रिस्तान एक ऐसी जगह है जहां सारी पंचायतें खत्म हो जाती हैं।	3
	(ख) यद्यपि समय के साथ-साथ भारत में भी गुरू-शिष्य संबंधों में परिवर्तन आया है, तो भी उनके पारस्परिक संबंधों में आज भी गरिमा, आस्था, श्रद्धा और स्नेह बना हुआ है। इस संबंध में गामा पहलवान का प्रसंग उद्घृत करना पर्याप्त होगा। आज भी साधुओं, पहलवानों और संगीतकारों में संबंधों की यह गरिमा पाई जाती है।	3
11	'इंसपेक्टर मातादीन' व्यंग्य लेख निश्चय ही वर्तमान पुलिस-व्यवस्था पर एक तीखा व्यंग्य है। उदाहरण के लिए उंगलियों के झूठे निशानों के बल पर किसी भी निर्दोष को सजा दिलाना, तथ्य के हर अंधेरे पक्ष को ही देखकर निर्णय करना, 'रूल इज रूल' कह कर नियमों पर अंधा होकर चलना, कम वेतन देकर भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी को बढ़ावा देना, 'ऊपरी आमदनी' के लिए निर्दोषों को पकड़ना, एफ.आई.आर. बदलना, बीच में उसमें पन्ने डालना, झूठे गवाह तैयार करना तथा गवाहों को तोड़ना आदि उनकी ऐसी बातों का लेखक ने व्यंग्य पूर्वक उल्लेख किया है जो भारतीय पुलिस-व्यवस्था पर करारा व्यंग्य हैं।	5
	अथवा	
	टोले-पड़ोस के बहुत से लोग उत्सवों पर महादेवी जी के घर आते थे। उनके साहित्यिक भक्त और बंधु बड़ी-बड़ी दूर से चलकर वहाँ आते और इन उत्सवों में भाग लेते थे। महादेवी जी होली आदि उत्सवों पर राई-लोन लेकर सबको जिस प्रकार तिलक लगातीं और मुँह मीठा करातीं, वे सब बातें लेखक के लिए सुखद स्मृतियाँ हैं। स्नेह-सद्भावना के प्रतीक ये समस्त उत्सव-आयोजन लेखक की स्मृति का ऐसा इतिहास बन गए है, जो आज भी उसके हृदय को कचोटते हैं।	
12	(क) महारानी लक्ष्मीबाई की विशेषताएँ (किन्हीं दो का उल्लेख अपेक्षित) (i) दृढ़ संकल्प की धनी "मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी; उसे फिर से लेकर रहूँगी।" (ii) बाबा गंगा दास के इन विचारों की वे प्रतिमूर्ति थीं: "निष्ठा, तपस्या, त्याग और बलिदान से ही स्वराज्य पाया जा सकता है।" (iii) वे कर्म में विश्वास करती हैं, फल कुछ भी क्यों न हो।	1+1=2
	(ख) चाचा घर के हर सदस्य की प्राणयण से सहायता करते थे। वे अपने लिए कुछ नहीं चाहते थे; किन्तु अतिरिक्त रूप में धन न कमा पाने के कारण निकम्मे समझे जाते थे।	2

प्रश्न संख्या	संभावित उत्तर / मूल्य-बिंदु	अंक - विभाजन
13	(i) हरिवंशराय बच्चन – 'अंधेरे का दीपक' (ii) आंख से मस्ती झपकती, बात से मस्ती टपकती थी हंसी ऐसी, जिसे सुन बादलों ने शर्म खाई। (iii) माना कि हम परिवर्तनशील समय और उसकी निष्ठुर शक्ति को नहीं रोक सकते, पर उसकी इस क्षण-भंगुरता पर मुस्कराने में तो कोई बंदिश नहीं है।	½+½=1 1+1=2 2
14	कविवर बालकृष्ण राव ने अपनी गीत-धर्मी कविता 'और भी हैं' में प्रतिपादित किया है कि इस संसार में अकेले तेरी ही राहें सुनसान नहीं हैं, और भी ऐसे लोग हैं, जो अकेले सफर कर रहे हैं, जिनकी राहें सुनसान हैं, अकेले तेरे ही हृदय में दर्द नहीं है, तेरी ही चाहें अधूरी नहीं हैं, और भी ऐसे लोग हैं जो प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझ रहे हैं, इसलिए धबराने और निराश होने की कोई बात नहीं है। (साठ-सत्तर शब्दों में उत्तर अपेक्षित)	4
15	काव्य-सौंदर्य का स्पष्टीकरण: अंक- विभाजन: (i) (क) भाव-सौंदर्य का स्पष्टीकरण (ख) भाव की नवीनता (ग) भाव-चित्रण में दृष्टि की मौलिकता (ii) (क) शिल्प-सौंदर्य (छंद (संगीत, लय गति), कल्पना-सौंदर्य (ख) भाषा-सौंदर्य (ग) अलंकारों और विशेषणों का प्रयोग	½+½+½+½+½+½ =3
16	'तरुण से' कविता में कवि तरुण का जयगान करते हुए कहता है कि तरुण का संकल्प, बल, साहस और कर्म हर जड़-चेतन को नया रूप देता है, उनमें जीवन का प्रवाह संचरित करता है। उसकी यही कर्म-चेतना जड़-चेतन को तृप्त करती है।	3
17	किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित: (क) मिथिलेश्वर की कहानी 'हत्यारों की वापसी' में पहली रात हत्यारे बिना काम किए ही लौट आते हैं; क्योंकि जिस व्यक्ति की हत्या करने के लिए हाजी ने उन्हें तीन हजार रूपए की मोटी रकम दी थी, उसे उन्होंने पहचान लिया था। वह एक निर्भीक और ईमानदार जन-सेवक था जो कुछ युवकों में चेतना और क्रान्ति जगाकर भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष कर रहा था। पिछले दिनों हैजे की बीमारी के समय इसी व्यक्ति ने गांव के लोगों की सहायता की थी। अंत में परिणाम की चिंता न कर तीनों हत्यारे इस व्यक्ति की हत्या करने का विचार त्याग कर लौट पड़ते हैं। (ख) पिता नहीं चाहते थे कि पुत्र लौटकर गांव में आए और जमीन-जायदाद संभाले। वे चाहते थे कि वह शहर में जा बसे और वहीं नौकरी करे; किन्तु पुत्र ने गांव में लौटकर पिता की इच्छा के विरुद्ध खेती-बाड़ी करने का निश्चय किया। (ग) 'प्रतिशोध' कहानी में प्रतिभा और अभ्यास की हत्या करने वाले भाव वर्मा के प्रतिशोध को दर्शाया गया है। इस ईर्ष्यालु कलाकार से प्रकृति भी प्रतिशोध लेती है। लगता है जैसे अभ्यास और प्रतिभा की आत्माओं ने ही उससे प्रतिशोध लिया, जिससे कि मंदिर के आस-पास की भूमि हिली और उसके नीचे दबकर भाववर्मा अपने ही प्रतिशोध का शिकार हो गया। **अथवा** महाबलिपुरम भाव वर्मा के प्रतिशोध के कारण ही प्रकृति के कोप का शिकार हो गया और वहां कोई बड़ी नगरी नहीं बन पाई।	2+2+2=6

प्रश्न संख्या	संभावित उत्तर / मूल्य-बिंदु	अंक - विभाजन
18	पृथ्वी के वैज्ञानिक मंगल गृह की मिट्टी के अध्ययन में जुटे रहे और उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि मंगल पर जीवन नहीं है।भाषा- 1 अंक (विस्तार से यथोचित उत्तर लिखने पर ही अंक दिए जाऐं।)	कथ्य- 4 अंक कुल- 5 अंक
19	'वारिस' कहानी में माँ अपने पुत्र को कहती है कि 'किसी ने गलती की है और सजा ये (उसके पति) भोग रहे हैं।' वस्तुत: मां का यह कथन औचित्यपूर्ण नहीं लगता। ठीक है कि मंदिर का पुजारी मंदिर के कीमती आभूषण और हीरे-जवाहरात लेकर कहीं जा छिपा था; किन्तु कहानी के अंत में पुत्र के सामने यह रहस्य उजागर हो जाता है कि क्यों उसके पिता निरंतर दुखी, व्यथित और उद्विग्न बने रहते थे; क्यों वे उसे शहर में जा बसने की सलाह देते थे। वस्तुत: उन्होंने ही पुजारी की हत्या कर डाली थी; किन्तु अपनी आत्मा की धिक्कार को वह नहीं सह सके। उन्होंने उस सारी सम्पत्ति का भी मोह छोड़ दिया था। कदाचित उन्होंने अपनी पत्नी को भी अंधेरे में रखा था। यही पीड़ा उन्हें सालती रही।	तर्क सहित उत्तर- 3 अंक भाषा- 1 अंक कुल- 4 अंक

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र - दो
कक्षा-X
हिंदी (पाठ्यक्रम 'बी'

समय - 3 घंटे **पूर्णांक - 100**

निर्देश : (i) **इस प्रश्नपत्र के चार खंड हैं - 'क', 'ख', 'ग' और 'घ'।**
(ii) **चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं।**
(iii) **प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।**

प्रश्न-संख्या	प्रश्न	निर्धारित अंक
	खण्ड 'क'	
1	**(क) किन्हीं दो में संधि-विच्छेद कीजिए :**	
	सदैव, जगदीश, सुखार्थी	2
	(ख) किन्हीं दो में संधि कीजिए :	
	पाठ + उपयोगी, चित् + आनंद, सु + आगत	2
2	**(क) किन्हीं दो पदों का विग्रह कीजिए :**	2
	रसोईघर, चोराहा, दिन-रात	
	(ख) नीचे लिखे किन्हीं दो पदों के समस्त पद बनाइए :	2
	शक्ति के अनुसार, माता और पिता, कमल जैसे नयन	
3	**(क) कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :**	
	(i) वह **शेर से** डरता है । (रेखांकित का कारक बताइए)	1
	(ii) वधू, बैल (बहुवचन बनाइए)	1
	(iii) गृहस्वामी ने **कवि को** बुलाया। (रेखांकित का लिंग बदलिए)	1
	(ख) निम्नलिखित में किन्हीं दो वाक्यों का वाच्य-परिवर्तन कीजिए :	2
	(i) पक्षी आकाश में उड़ते हैं।	
	(ii) मुझ से पढ़ा नहीं जाता।	
	(iii) पेड़ कट गए हैं ।	
	(ग) कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :	
	(i) वीरता, व्यवहार (विशेषण बनाइए)	1
	(ii) निम्नलिखित वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का भेद बताइए :	1
	मोहन पत्र पढ़ लेगा । **अथवा** रचना दौड़ रही है।	
	(घ) शब्द और पद का अन्तर स्पष्ट कीजिए और दोनों का एक-एक उदाहरण दीजिए।	2
4	**(क) निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध कीजिए :**	2
	(i) वह मेरे को बुला रहा था।	
	(ii) देवेन्द्र स्कूल से वापिस लौट आया।	
	(iii) एक गर्म प्याला चाय तो पीती जाओ ।	
	(ख) निम्नलिखित में उपयुक्त स्थान पर सही विराम-चिह्न लगाइए :	2
	शीला ने पूछा क्या हाल है मोहन राधा और सौम्या कहाँ हैं?	

प्रश्न संख्या	प्रश्न	निर्धारित अंक
	(ग) निर्देशानुसार उत्तर लिखिए :	
	(i) छात्र घर पहुँचे। छात्र टी० वी० देखने लगे। (एक सरल वाक्य में बदलिए)	1
	(ii) रामू आ गया। (प्रश्नवाचक वाक्य बनाइए)	1
	(iii) शाम तक जरूर आ जाना। (अर्थ के आधार पर वाक्य-भेद बताइए)	1
	(iv) छात्र मैदान में खेल रहे हैं। (उद्देश्य और विधेय छाँटिए)	1
	(v) माता जी बाजार गईं और खिलौने लाईं। (रचना के आधार पर वाक्य का प्रकार बताइए)	1
	(vi) अनुमान है कि कल वर्षा होगी । (आश्रित उपवाक्य छाँटिए)	1
	खण्ड 'ख'	
5.	अपने क्षेत्र के पोस्टमास्टर को पत्र लिखिए जिसमें मनीआर्डर प्राप्त न होने की शिकायत की गई हो।	5
	अथवा	
	A 503, द्वारका में रहने वाले मुकेश ने आपका गुम हुआ परिचय-पत्र डाक से लौटाया है। उसका आभार व्यक्त करते हुए पत्र लिखिए।	
6	**निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग २०० शब्दों में एक निबंध लिखिए :**	**10**
	क) विज्ञान वरदान है या अभिशाप :	
	(विज्ञान शब्द का **<u>अर्थ, वरदान</u>** - चिकित्सा में, कृषि में, यातायात में, दैनिक जीवन में। **<u>अभिशाप</u>**) अस्त्र-शस्त्र निर्माण में, जीवन मूल्यों का पतन।)	
	ख) पराधीन को सुख कहाँ :	
	(पराधीन का अर्थ, पराधीनता में व्यक्ति का विकास नहीं होता, व्यक्ति हीनता का शिकार हो जाता है, सुखी नहीं हो सकता- प्रकृति से उदाहरण।)	
	ग) मेरे क्षेत्र का मेला :	
	(भारत मेलों का देश, मेरे क्षेत्र का मेला, मेला क्यों, कब? मेले की भीड़, मेले की याद, मेलों का महत्त्व।)	
	खंड 'ग'	
7	**नीचे लिखे गद्यांश को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**	
	स्त्रियों को शिक्षा के क्षेत्र के समान चिकित्सा के क्षेत्र में भी आना चाहिए। वे शरीर तथा स्वभाव दोनों से ही इस विषय के लिए उपयुक्त हैं। भारतीय महिलाएँ प्रायः बीमार और कमज़ोर रहती हैं । उनके बच्चे भी अकाल मृत्यु के ग्रास बन जाते हैं। इन समस्याओं की खोज और समाधान स्त्रियाँ ही भली-भाँति कर सकती हैं। कुछ स्त्रियाँ इस व्यवसाय को अपनाना चाहती हैं पर उनके पति इस व्यवसाय को अपनी प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं मानते। उन्हें विवश होकर व्यवसाय से विमुख होना पड़ता है। पतियों को समाज के हित के लिए निरर्थक सम्मान की भावना का त्याग करना चाहिए। यदि वे ऐसा कर सकें तो समाज और परिवार दोनों का ही भला होगा।	
	क) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।	1X4=4
	ख) लेखक के अनुसार वर्तमान समय में स्त्रियाँ किस क्षेत्र में कार्यरत हैं ?	

प्रश्न संख्या	प्रश्न	निर्धारित अंक
	ग) महिलाओं को चिकित्सा-क्षेत्र में क्यों आना चाहिए?	
	घ) चिकित्सा-क्षेत्र में आने के लिए स्त्रियों के सामने क्या बाधाएँ हैं ?	
8	**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :** विषुवत् रेखा का वासी जो, जीता है नित हाँफ-हाँफ कर । रखता है अनुराग अलौकिक, वह भी अपनी मातृभूमि पर। ध्रुववासी जो हिम में, तम में, जी लेता है काँप-काँप कर । वह भी अपनी मातृभूमि पर , कर देता है प्राण-निछावर। तुम तो हे प्रिय बंधु ! स्वर्ग-सी, सुखद, सकल विभवों की आकर, धरा शिरोमणि मातृभूमि में, धन्य हुए हो जीवन पाकर।।	
	(i) भारतवासी का जीवन धन्य क्यों है?	1X4=4
	(ii) ध्रुवीय क्षेत्र में रहने वालों के जीवन में क्या-क्या कठनाइयाँ हैं?	
	(iii) विषुवत् रेखा का वासी हाँफ-हाँफ कर क्यों जीता है?	
	(iv) 'सकल विभवों की आकर' किसे कहा गया है? क्यों?	
	खंड 'घ'	
9	**निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए:** पीड़ा है तो आशा भी है। मनुष्य, सोचने-समझने वाला मनुष्य-आज चिंतित है 'उसके मन में दर्द है। सैकड़ों प्रमाण दिए जा सकते हैं कि मनुष्य जाग्रत है। वह विवेक एकदम नहीं खो बैठा है। मनुष्य आज भी जागरूक है। जिस किसी ने मनुष्य को इस रूप में विकसित किया है, वह भी सावधान है। मनुष्यता निस्संदेह बच जाएगी। कितनी बार मनुष्य भटका है, गिरा है, बेहोश हुआ है, इसका कोई हिसाब नहीं बताया जा सकता। फिर भी वह सम्हलकर फिर से उठा है। अपनी ही गलतियों के जाल से उसने अपने को मुक्त किया है।	
	(i) उपर्युक्त गद्यांश जिस पाठ से उद्धृत किया गया है, उसका और उसके लेखक का नामोल्लेख कीजिए।	1
	(ii) 'पीड़ा है तो आशा भी है' वाक्य का तात्पर्य स्पष्ट शब्दों में समझाइए।	2
	(iii) ''कितनी बार मनुष्य भटका है, गिरा है, बेहोश हुआ है, इसका कोई हिसाब नहीं बताया जा सकता। फिर भी वह सम्हलकर फिर से उठा है, अपनी ही गलतियों के जाल से अपने को मुक्त किया है।'' उपर्युक्त गद्यांश का आशय स्पष्ट कीजिए।	2
10	लेखक को कब्रिस्तान में जीवन का सबसे बड़ा पुरस्कार क्या मिला था, जिसके कारण उसका माथा आज भी सोचकर कृतज्ञता से झुक जाता है? 'कब्रिस्तान में पंचायत' पाठ के आधार पर लिखिए। अथवा महादेवी जी अपने जीवन में आई पारिवारिक अपूर्णता की तृप्ति किस प्रकार करती थीं?– 'उत्सवधर्मी महादेवी' पाठ के आधार पर लिखिए।	6

प्रश्न संख्या	प्रश्न	निर्धारित अंक
11	'पादुका पूजन' पाठ में विधान बाबू के पादुका पूजन में चाचा के प्रति प्रेम के साथ-साथ उनकी ग्लानि भी झलकती है।'– कैसे? तर्क-सहित स्पष्ट कीजिए। **अथवा** 'भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य संबंध' पाठ के आधार पर प्राचीन भारत में गुरु-शिष्य संबंधों पर अपने विचार लागभग 80 शब्दों में लिखिए।	5
12	(क) पुलिस कर्मचारियों का वेतन घटा दिए जाने पर उनकी मनोवृत्ति में कैसे और किस तरह के परिवर्तन आए?– 'इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर' पाठ के आधार पर लिखिए। (ख) 'स्वराज्य की नींव' शीर्षक कहां तक सार्थक है? इस एकांकी के लिए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।	2 2
13	**निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:** देखते देखा मुझे तो एक बार, उस भवन की ओर देखा, छिन्न तार। देखकर कोई नहीं, देखा मुझे उस दृष्टि से जो मार खा रोई नहीं। (i) कवि और कविता का नामोल्लेख कीजिए। (ii) मजदूर युवती ने सामने के ऊँचे भवन को क्यों देखा तथा उस पर क्या प्रतिक्रिया हुई? (iii) 'देखा मुझे उस दृष्टि से, जो मार खा रोई नहीं'– का आशय स्पष्ट कीजिए।	 1 2 2
14	'गीत-फ़रोश' अथवा 'अँधेरे का दीपक' कविता का प्रतिपाद्य लगभग 60 शब्दों में लिखिए।	4
15	**निम्नलिखित काव्यांश का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए:** गिरि का गौरव गा-गा झर-झर, मद में नस-नस उत्तेजित कर। मोती की लड़ियों से सुंदर, झरते हैं झाग-भरे निर्झर। **अथवा** गिरिवर के उर से उठ-उठकर, उच्चाकांक्षाओं से तरुवर। हैं झाँक रहे नीरव नभ पर, अनिमेष, अटल, कुछ चिंता पर।	3
16	'मित्र-प्रसंग' में महाकवि तुलसीदास ने सच्चे और अच्छे मित्र की क्या-क्या विशेषताएं बताई हैं?	3
17	**केवल बीस-पच्चीस शब्दों में उत्तर दीजिए:** (क) 'खेल' कहानी में भाड़ बनाने के बाद बालिका की सुंदर कल्पनाएं व्यथा में क्यों बदल गईं? (ख) 'प्रतिशोध' कहानी में भाववर्मा ने अभ्यास और प्रतिभा को क्यों मरवा दिया? (ग) 'पार नजर के' आधार पर बताइए कि अन्तरिक्षयान का यांत्रिक हाथ क्या कर रहा था?	 2 2 2

प्रश्न संख्या	प्रश्न	निर्धारित अंक
18	'वारिस' कहानी में टार्च की रोशनी में पुत्र ने तहखाने में ऐसा क्या देखा, जिससे उसके सामने मृत पिता की पहेली जैसी बात का मतलब चमक उठा? जो कुछ उसने देखा उससे उसके सामने क्या बात स्पष्ट हो उठी?	5
19	'भाव वर्मा स्वप्न द्रष्टा था, पर स्रष्टा न था'– कथन के आधार पर 'प्रतिशोध' कहानी के प्रमुख पात्र भाववर्मा के चरित्र पर प्रकाश डालिए।	4

अंक-योजना (प्रतिदर्श प्रश्नपत्र - दो)
कक्षा - X
हिंदी - (पाठ्यक्रम 'बी')

प्रश्न संख्या	संभावित उत्तर / मूल्य-बिंदु	निर्धारित अंक
	खण्ड 'क'	**संधि --**
	* किन्हीं दो के उत्तर अपेक्षित :	
1	(क) सदा + एव, जगत् + ईश, सुख़ + अर्थी (प्रत्येक शुद्ध उत्तर के लिए एक अंक)	1+1 = 2
	(ख) पाठोपयोगी, चिदानन्द, स्वागत (प्रत्येक शुद्ध उत्तर के लिए एक अंक)	1+1 = 2
2	समास -	
	(क) (किन्हीं दो पदों का विग्रह अपेक्षित; प्रत्येक शुद्ध उत्तर के लिए एक अंक)	1+1 = 2
	चार राहों का समूह, दिन और रात, रसोई के लिए घर	
	(ख) (किन्हीं दो के समस्त पद अपेक्षितः) यथाशक्ति, माता-पिता कमल - नयन	1+1 = 2
3	(क) (प्रत्येक शुद्ध उत्तर के लिए एक अंक)	
	(i) अपादान कारक	1
	(ii) वधुएँ , बैल	1
	(iii) गृह-स्वामिनी , कवयित्री	1
	(ख) (i) पक्षियों से आकाश में उड़ा जाता है।	1
	(ii) मैं नहीं पढ़ता ।	1
	(iii) पेड़ काटे गए हैं।	
	(ग) लौकिक	1
	(i) वीर, व्यावहारिक	1
	(ii) सकर्मक / अकर्मक -	1
	(घ) वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द पद बन जाता है जैसे - लड़के को बुलाओ	
	('लड़का'- शब्द है, 'लड़के को'- पद	2
4	(क) (i) वह मुझे बुला रहा था।	1+1=2
	(ii) देवेन्द्र स्कूल से लौट आया **या** देवेन्द्र स्कूल से वापिस आ गया।	
	(iii) एक प्याला गर्म चाय तो पीती जाओ।	
	(कोई दो उत्तर अपेक्षित)	
	(ख) शीला ने पूछा, ''क्या हाल है ? मोहन, राधा और सौम्या कहाँ हैं?''	
	(प्रत्येक चिह्न के लिए 1/2 अंक)	1/2 X 4=2
	(ग) (i) छात्र घर पहुँचकर टी० वी० देखने लगे।	1
	(ii) क्या रामू आ गया ?	1
	(iii) आज्ञार्थक	1
	iv) छात्र - उद्देश्य	1
	खेल रहे हैं - विधेय	
	(v) संयुक्त वाक्य।	1
	(vi) कल वर्षा होगी (आश्रित उपवाक्य)	1

प्रश्न संख्या	संभावित उत्तर / मूल्य-बिंदु	निर्धारित अंक
	खण्ड 'ख'	
5	पत्र : पत्र की औपचारिकताओं के लिए - विषय-वस्तु के लिए - शुद्ध भाषा - प्रयोग के लिए -	1 3 1 } 5 अंक
6	निबंध : (i) उपयुक्त भूमिका (ii) विषय-प्रतिपादन (iii) भाषा-शैली (iv) निष्कर्ष-निर्वाह	2 4 2 2 } 10 अंक
	खण्ड 'ग'	
7	(क) स्त्री और चिकित्सा क्षेत्र / चिकित्सा क्षेत्र में स्त्रियाँ (अन्य उपयुक्त शीर्षक भी स्वीकार्य) (ख) शिक्षा क्षेत्र में (ग) शारीरिक और स्वभावगत (घ) उनके पति	1x4=4
8	(i) स्वर्ग-सी , सुखद, सभी प्रकार के धन-वैभव से पूर्ण, पृथ्वी पर सर्वोत्तम देश है भारत (ii) अत्यधिक सर्दी और अंधकार । (iii) क्योंकि वहाँ भयंकर गर्मी पड़ती है । (iv) भारत वर्ष को, क्योंकि भारत भूमि सभी प्रकार के धन-धान्य से परिपूर्ण है।	1*4=4
	खंड- 'घ'	
9	(i) पाठ- 'मनुष्य का भविष्य' लेखक- आचार्य हजारी प्रसार द्विवेदी	½ ½
	(ii) यदि तन या मन में पीड़ा है तो उपचार या समाधान भी अवश्य होगा। पीड़ा से जो तनाव होता है, जो व्याकुलता और छटपटाहट होती है, वह निश्चय ही आशाजनक परिणाम लेकर आती है।	कथ्य 1½ अंक भाषा ½ अंक कुल 2 अंक
	(iii) लेखक मनुष्य के भविष्य के प्रति आशान्वित है। वह जानता है कि इतिहास में भी मनुष्य जाने कितनी बार भटका है, वह उचित सोच-विचार नहीं कर सका, पर वह अपने आप संभला भी है, भ्रम और अनिश्चय के भवँर से स्वत: बाहर भी आया है; अतएव उसके भविष्य को लेकर लेखक को कोई भय या संदेह नहीं है।	कथ्य 1½ अंक भाषा ½ अंक कुल 2 अंक
10	यद्यपि लेखक को अपने जीवन में अनेक प्रकार के पारितोषिक, उपहार और पुरस्कार मिले थे, किन्तु उस कब्रिस्तान को लेकर जिस प्रकार दोनों ही समुदायों के लोगों का उसे विश्वास प्राप्त हुआ तथा जिस प्रकार उसे दोनों ने ही पंचायत की ओर से निर्णायक बनाया, वह उसके जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि थी। आज भी जब-जब वह उस घटना को स्मरण करता है, उसका मन दोनों समुदायों के प्रति कृतज्ञता से भर जाता है। **अथवा** लेखक के अनुसार महादेवी जी अपने जीवन में आई पारिवारिक अपूर्णता की पूर्ति अनेक प्रकार से करती थीं। वे हर पर्व-त्योहार पर अपने साहित्यिक मित्रों, पास-पड़ोस के लोगों	तर्कपूर्ण उत्तर 5 अंक भाषा 1 अंक कुल 6 अंक

प्रश्न संख्या	संभावित उत्तर / मूल्य-बिंदु	निर्धारित अंक
	और बच्चों को निमंत्रित करती थीं, उन्हें स्नेह-सम्मान के साथ बुलाती थीं तथा उस पर्व को परिपूर्ण आस्था और रीति-नीति के साथ मनाती थीं। अपनी रिक्तता को भरने के लिए उन्होंने पशु-पक्षियों की बड़ी संख्या पाल रखी थी, जिनके साथ उनका स्नेह-लगाव अपने परिवार के सदस्यों की तरह ही था।	
11	'पादुका-पूजन' पाठ में चाचा की पादुकाओं का पूजन करने में एक ओर विधान बाबू का अपने स्वर्गीय चाचा के प्रति प्रेम और कृतज्ञता झलकती है, वहीं दूसरी ओर वह ग्लानि भी झलकती है जो किसी भी रूप में उनके हृदय से दूर नहीं हो पाती। जिस चाचा ने उस पर अपना सुख-चैन लुटाया, इतना बड़ा अधिकारी बन जाने पर भी वह उसे एक जोड़ी पादुकाएं खरीदकर नहीं दे सका और उसका प्रिय चाचा पादुकाओं की इच्छा लिए-लिए ही चल बसा। आज भी जब धू-धू दुपहरी से घरती जल रही होती है, चाचा उन्हीं चप्पलों को पहनकर थप-थप करते उसके सीने पर जैसे चला करते हैं। यही वह गहरी ग्लानि है, जो उन्हें चैन नहीं लेने देती।	उपयुक्त उत्तर के कथ्य पर 4 अंक भाषा 1 अंक कुल 5 अंक
	अथवा	
	आनंद शंकर माधवन द्वारा रचित 'भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य संबंध' पाठ में लेखक ने कहा है कि हम भारतीयों के सार्वजनिक व्यवहार में अन्य संबंधों में भले ही कम बदलाव आया हो, पर गुरु-शिष्य संबंधों में आया बदलाव सबसे अधिक स्पष्ट और उल्लेखनीय है। यहां गुरु वेतन भोगी नहीं होते थे और न ही शिष्य को किसी तरह का कोई शुल्क अदा करना पड़ता था। पैसे देकर विद्या खरीदने की क्रय-विक्रय पद्यति हमारे इस देश में नहीं थी। यहां शिक्षणालय मंदिर के समान थे तथा गुरु को साक्षात् परमेश्वर ही समझा जाता था। शिष्य पुत्र से भी अधिक प्रिय था तथा शिक्षादान एक आध्यात्मिक अनुष्ठान माना जाता था जो आज पेट पालने का जरिया बन चला है।	
12	(क) पुलिस की कार्य-क्षमता सुधारने के लिए इंस्पेक्टर मातादीन चांद देश में पुलिस कर्मचारियों का वेतन कम करा देता है ताकि वे ऊपरी आमदनी करने के लिए विवश होकर झूठ को सच और सच को झूठ बनाने के लिए मुस्तैद हो जाएँ। हुआ भी यही। वेतन घटा दिए जाने पर पुलिस में हडकम्प मच गया। वह चारों तरफ नजर रखने लगी। अपराधियों की दुनिया में घबराहट छा गई।	उपयुक्त उत्तर के कथ्य पर 2 अंक
	(ख) 'स्वराज्य की नींव' एक सार्थक शीर्षक है। इस एकांकी में रानी लक्ष्मीबाई के त्याग और संघर्ष का वर्णन किया गया है। स्वराज्य की नींव रखने में स्त्रियों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इस एकांकी के पात्र स्वराज्य की नींव के पत्थर हैं जिनके बलिदान और त्याग-तपस्या के द्वारा भले ही स्वराज्य प्राप्त नहीं हो सका, किन्तु वे स्वराज्य की नींव के पत्थर बनकर जनमानस में स्वतंत्रता और देश-प्रेम की भावना जगाने में निश्चय ही सहायक बने।	उत्तर का कथ्य 2 अंक
13	(i) कवि- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला कविता- 'तोड़ती पत्थर'	½+½=1 अंक
	(ii) मजदूर युवती ने अपनी ओर दयापूर्वक देखते कवि को सामने के ऊँचे भवन में रहने वाला समझा। सुनसान दुपहर में पत्थर तोड़ते उसके हाथ सहसा रुक गए और उसने कवि की ओर बड़ी दयनीयता से देखा। अचानक वह सँभल गई, थोड़ा काँपी, उसके माथे से पसीने की बूँदें ढुलककर गिर गईं और वह फिर से पत्थर तोड़ने लगी, जैसे उसने कवि को कहा हो– जाओ, मुझ पर दया दिखाने की जरूरत नहीं है, पत्थर तोड़ना मेरी नियति है, मेरा भाग्य है।	कथ्य -1½ अंक भाषा 0½ अंक कुल - 2 अंक

प्रश्न संख्या	संभावित उत्तर / मूल्य-बिंदु	निर्धारित अंक
	(iii) पत्थर तोड़ने वाली युवति ने जब कवि को अपनी तरफ दयापूर्वक देखते देखा तो उसे अपनी दीन-हीन और विवश स्थिति का आभास हुआ। उसने कवि को उस व्यक्ति की तरह बेबस और दयनीय आँखों से देखा, जिसकी बहुत पिटाई हुई हो, किन्तु वह फिर भी रोया न हो। इस पंक्ति से कवि की अन्तर्भेदिनी दृष्टि का परिचय मिलता है।	कथ्य -1½ अंक भाषा 0½ अंक कुल - 2 अंक
14	कविवर भवानी प्रसाद मिश्र ने 'गीत फरोश' में साहित्य पर पड़ने वाले बाजार के प्रभाव को चित्रित किया है। बाजार में किसी भी वस्तु का मूल्य लाभ-हानि की तराजू पर तय होता है; वहां भावना अथवा संवेदना का कोई मूल्य नहीं होता। गीता का कविता भी बाजार में पहुंचकर अपना वास्तविक उद्देश्य खो देते हैं। मांग के अनुसार ही कविताएं लिखी जाने लगी हैं। 'गीत-फरोस' कविता इसी विडंबना पर एक व्यंग्य है। कवि उन परिस्थितियों पर भी व्यंग्य करता है जिनके कारण कवि को गीत बेचने के लिए विवश होना पड़ा। **अथवा** 'अंधेरा का दीपक' कवि 'बच्चन' का एक लोकप्रिय गीत है, जिसमें उन्होंने कहा है कि जीवन में यदि चारों ओर अंधेरा, निराशा, असफलता और पराजय दिखाई देने लगे तो भी हारकर बैठ रहना उचित नहीं है। भव्य भवन यदि ढह गया हो तो भी अपनी छोटी-सी कुटिया तो बनाई ही जा सकती है तथा यदि उल्लास के क्षण छिन भी जाएँ तो समय की परिवर्तनशीलता पर मुस्कराया जा सकता है। विपरीत परिस्थितियों का साहसपूर्वक सामना करना ही मनुष्य का धर्म है।	कथ्य - 3 अंक भाषा - 1 अंक कुल - 4 अंक
15	कविवर सुमित्रानंदन पंत की कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' से उद्धृत इन पंक्तियों में पर्वत पर वर्षा के दृश्य का अनुपम चित्रण हुआ है। अपनी चित्रात्मक और संगीतमयी भाषा द्वारा कवि ने 'झर-झर' नाद करते झरनों के झरने तथा उन पर उछल-उछलकर गिरती बूंदों के सौंदर्य का चित्र तो अंकित किया ही है, अपनी अनुप्रासमयी भाषा द्वारा झरनों की झर-झर को भी हमारे हृदय में भर दिया है। **अथवा** कविवर सुमित्रानंदन पंत की कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' से उद्धृत इन पंक्तियों में पर्वत पर वर्षा के दृश्य का सुंदर चित्रांकन किया गया है। पर्वत पर खड़े हुए लंबे-लंबे वृक्ष ऐसे लग रहे हैं जैसे वे पर्वत की उच्चाकांक्षाएं हों, जो उसके हृदय से उठकर आकाश तक तन गई हों। वे वृक्ष नीरव आकाश में सिर उठाए मानो चिंतित से खड़े हैं। उपमा अलंकार के प्रयोग और दृश्य चित्रण में कुशल कवि की दृश्यविधायिनी कल्पना सचमुच द्रष्टव्य है।	कथ्य - 2 अंक भाषा - 1 अंक कुल - 3 अंक
16	'मित्र-प्रसंग' में महाकवि तुलसीदास ने सच्चे और अच्छे मित्र के लक्षण बताते हुए कहा है कि जो अपने पहाड़ से दुख-दर्द को सामान्य-सहज मानकर उसकी चर्चा अपने मित्र से नहीं करता तथा मित्र के कण-जैसे सामान्य दुख को सुमेरु पर्वत जैसा बड़ा समझता है और जो अपने मित्र को कुमार्ग से हटाकर सुमार्ग पर चलाता है; उसके सद्गुणों की सर्वत्र चर्चा करता है; किन्तु उसके अवगुणों को छिपाता है; मित्र को कुछ भी देते-लेते समय मन में कोई शंका नहीं करता और अपनी शक्ति के अनुसार सदा मित्र का हित करता है तथा विपत्ति के समय मित्र से सौ गुणा प्रेम करता है, वही सच्चा मित्र है।	कथ्य - 2½ अंक भाषा - 0½ अंक कुल - 3 अंक
17	केवल बीस-पच्चीस शब्दों में उत्तर अपेक्षित: (क) भाड़ बनाने के पश्चात् वह उसे लेकर सुंदर-मनोरम कल्पनाओं में खोई थी कि मनोहर ने एक ही लात से उसे धराशायी कर दिया। अपनी कल्पनाओं के महल का इस प्रकार ध्वंस देखकर सुरबाला के मुंह पर शून्य फैल गया। उसका मन व्यथा से भर उठा।	2 अंक

प्रश्न संख्या	संभावित उत्तर / मूल्य-बिंदु	निर्धारित अंक
	(ख) अभ्यास और प्रतिभा उच्चकोटि के कलाकार थे, जिन्होंने रात-दिन एक करके महाबलिपुरम के पहाड़ों पर भव्य मूर्तियां अंकित की थीं; किन्तु ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित होकर तथा झूठा यश अर्जित करने के लिए भाववर्मा ने उन्हें मरवा डाला।	2 अंक
	(ग) अन्तरिक्षयान का यांत्रिक हाथ बाहर निकला। हर पल उसकी लंबाई बढ़ती ही जा रही थी। वह शायद जमीन तक पहुंचकर मिट्टी उकेर लेना चाहता था ताकि उस मिट्टी का वैज्ञानिक अध्ययन किया जा सके।	2 अंक
18	'वारिस' एक उलझे-से कथ्य की रहस्यमयी कहानी है। कहानी में अंत तक स्पष्ट नहीं हो पाता कि देवी के कीमती आभूषण किसने चुराए थे और मंदिर का पुजारी तभी से कहां गायब हो गया था। अंत में जब लेखक ने टॉर्च की रोशनी में तहखाने में पुजारी का कंकाल पड़ा देखा तथा सभी जेवर इधर-उधर बिखरे हुए देखे तो वह सब-कुछ समझ गया। वह समझ गया कि चोरी पुजारी ने की थी और उसके पिता ने लोभ-वश पुजारी की हत्या कर दी थी।	उपयुक्त उत्तर 4 अंक भाषा - 1 अंक कुल - 5 अंक
19	'प्रतिशोध' कहानी का प्रमुख पात्र भाववर्मा राजनीति और कूटनीति का सहारा लेकर कलाकार दम्पत्ति प्रतिभा और अभ्यास को समाप्त करके अपनी पापी चालों में सफल होकर पुरस्कृत होता है। केवल महाबलिपुरम के निर्माण का स्वयं श्रेय लेने के लिए वह ईर्ष्या और द्वेष से पागल होकर यह क्रूर कर्म करता है; किन्तु वह भावनाशील भी है; अतएव उसकी अन्तर्रात्मा उसे चैन नहीं लेने देती, उसका पाप ही मानो अभ्यास और प्रतिभा का प्रतिशोध ले रहा हो। उसका मन टुकड़े-टुकड़े हो चुका है और वह पागल-सा बड़बड़ा उठता है। महाबलिपुरम के निर्माता का श्रेय पा लेने पर भी उसकी अपनी आत्मा उसे ठीक से जीने नहीं दे रही है।	उपयुक्त कथ्य के लिए- 3 अंक भाषा - 1 अंक कुल - 4 अंक